कविता

अब तो मुझे भी पढ़ने दो!

लक्ष्मी रानी 'चंदेल' *

मेरा ये मासूम बचपन,
न कैद होने दो चार दीवारों में,
न डालो रूढ़िवादी समाज की बेड़ियाँ मेरे पाँवों में,
पढ़ने दो, कुछ करने दो,
अब तो मुझे भी पढ़ने दो.....

बेटी हूँ, अभिशाप न मानो मुझे,
हर क्षेत्र में बेटों से आगे जानो मुझे,
पढ़ने दो, कुछ करने दो,
अब तो मुझे भी पढ़ने दो.....

पढ़-लिखकर आगे बढ़ना है मुझे,
अपने माता-पिता का सपना पूरा करना है मुझे,
आसमाँ की ऊँचाइयों को छूने दो,
पढ़ने दो, कुछ करने दो,
अब तो मुझे भी पढ़ने दो.....

न करो कच्ची उम्र में विवाह मेरा,
पढ़कर सभ्य होने दो जीवन मेरा,
आनेवाली पीढ़ी में ज्ञान का दीप जलाने दो,
पढ़ने दो, कुछ करने दो,
अब तो मुझे भी पढ़ने दो.....

अब नहीं किसी के रहमोकरम पर जीना,
कुछ कर दिखाना चाहती हूँ,
जैसी बनी कल्पना चावला, सानिया मिर्ज़ा, मैं भी बनना चाहती हूँ,
पढ़ने दो, कुछ करने दो,
अब तो मुझे भी पढ़ने दो.....

* कनिष्ठ परियोजना अध्येता, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली